JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री संघर्ष का आईना :शिवमूर्ति की कहानी तिरियाचारित्तर

श्रीमती अनुष्का प्रदीप पाचंगे

शोध-छात्रा

एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय मुम्बई.

आधुनिक हिन्दी कहानी में सबसे अलग उभरकर जो एक नाम आता है,वह है –शिवमूर्ति का | शिवमूर्ति को पढ़ाने का अर्थ है –उत्तर भारत के गाँवों को उसकी सम्पूर्णता में जानना। गाँव ही शिवमूर्ति की प्रकृति लीला-भूमि है। इसे केन्द्रित करके उनका कथाकार दूर - दूर तक मंडराता है। गाँव के रीती – रिवाज , ईष्या – द्वेष, राग – विराग, जड़ों में धँसे यौन – बुभुक्षा, पर्त-दर- पर्त उजागर होता वर्णवादी – वर्गवादी शोषण, मूल्यहीन राजनीति और उनके बीच भटकती लाचार जिन्दगियाँ आदि।

प्रकृतवाद में वे जोला के आस – पास दिखते हैं तो पात्रों के जीवन्त चित्रण में गोर्की के समीप। संवादों की ध्वन्यात्मकता से वे सतीनाथ भादुडी और रेणु की याद दिलाते हैं तो बिम्ब – विधान में जैक लन्दन की। पर इन सबके बावजूद शिवमूर्ति का जो 'अपना' है वह कहीं और नहीं।

लोग हैरान रह जाते हैं यह देखकर कि जब स्वयं जनवादियों की कहानियों से 'जन' दिनों –दिन दूर होते जा रहे हैं, बिना घोषित जनवादी हुए शिवमूर्ति की कहानियाँ लोकमानस के इतने करीब कैसे हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि शिवमूर्ति के साथ ही हिंदी कहानी में पुनः कथारश की वापसी हुई है। आज जब कहानी में पठनीयता के संकट का सवाल उठा हुआ है शिवमूर्ति इस सवाल का सही जवाब हैं। तिरिया चरित्तर विमली की कहानी है। जो पूरे परिवेश में अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण चर्चा का विषय बनी है।

तिरिया चरित्तर कहानी की विमली दरअसल माँ – बाप के लिए लड़का बनकर रहती है। अपने माता – पिता को मेहनती कामों से दूर रखती है। विमली का भाई शादी के बाद अपनी पत्नी लेकर अलग रहने लगता है तो घर का सारा काम, खर्चा – पानी उठाने का काम बिमली ही करती है। वह ईंट के भट्टे पर काम करने लगती है तथा माता – पिता और स्वयं का जीविकोपार्जन करने लगती है। पहले तो गाँव – वाले विमली द्वारा भट्टे पर काम किये जाने पर उसके माता – पिता को भड़काते हैं किंतु बाद में बिमली की देखा – देखी गाँव की और कई लडकियाँ और महिलायें भट्टे पर काम करनी लगती हैं। विमली धीरे – धीरे भट्टे पर हो रहे स्त्री – शोषण से परिचित होती है और उसका उत्तर देना भी सीख जाती है। जैसे भट्टे पर देरी पहुँचाने पर कुइसा आँख तरेरते हुये विमली से कहता है , "अब तेरा आने का टैम हुआ है ? दस बजने वाला है। चलते समय घड़ी देखा था ?" १ विमली कुइसा की आदत जानती है। बिना मसखरी किए उसका खाना हज़म नहीं हो सकता। वह भी आँख तरेरती है, और कहती है "जेतना काम करेंगे ओतना न मजूरी मिलेगी। तब काहें तोहार छाती फाटत है? और घड़ी देखै अपनी बहिनी को सिखाओ।" विमली के उपर्युक्त कथन से उसकी निर्भयता साफ दिखाई देती है।

कुइसा की कथा भी रोमांचक है। पचास वर्ष के करीब पहुँचा कुइसा। दर्जनों भट्टों पर बोझवा मिस्त्री रह चुका है। भट्टे का काम हाथ में लेने से पहले देख लेता है – कौडिहा मजदूर सिर्फ रांची के ही हैं या लोकल भी। सिर्फ रांची – विलासपुर के लेबरों वाले भट्टे पर एक दिन भी नहीं रह पाता कुइसा। दस – पाँच लोकल मजदूरनें जरुरी हैं – देखने लायक! सिर से ईंट उतारते हुए गरम साँस और तन का परस! कुइसा के इस 'लोभ' से वाकिफ हैं खान साहब। तभी तभी तो इस भट्टे पर वह तीसरा सीजन बिता रहा है। दरअसल भट्टे को ही कुइसा घर-द्वार मानता है। जोरू न जाती उसकी। गौना आया तो कुइसा पर भट्ठा मिस्तरी बनने का भूत सवार था। पूरा का पूरा सीजन भट्टे पर बीतता। आखिर दो साल इंतजार करने के बाद उसकी औरत चली गई किसी और का घर बसान। तब से हर साल 'लगन' के महीनों में कुइसा बरदेखुओं का इंतजार करता है।

कुइसा के ही भट्ठे पर डरेवर बाबू आते हैं, जिसे विमली मन ही मन चाहती है किन्तु उसे यह भी पता है कि,उसका ब्याह बचपन में ही हो चुका है। बचपन में हुये ब्याह की अब उसे धुँधली छवि ही याद है। अपने पति का चेहरा भी उसे याद नहीं फिर भी उसे लगता है कि, वह एक शादी – शुदा औरत है और उसका दूसरे मर्द के साथ नजदीकियाँ बढ़ाना बिलकुल उचित नहीं है। अतः वह डरेवर बाबू को चाहते हुए भी उनसे एक समुचित दूरी बनाये रखती है। इसी भट्टे पर काम करने वाला 'बिल्लर' अक्सर विमली को 'डरेवाईन' कहकर चिढ़ाता है। विमली बिल्लर को सबके सामने तो डाँटती है किन्तु अकेले में थोड़ा डरती भी है। क्योंकि पाजी है बिल्लर उसके आँखों में शैतानी चमकती है।

'बिल्लर' बिना माँ – बाप का लड़का है। अट्ठारह –उन्नीस वर्ष कि उम्र है उसकी। माता – पिता नहीं हैं उसके। इसी गाँव में अपनी बहन के घर रहता है और खान साहब के ट्रेक्टर की कलिंजरी करते–करते ड्राईवर बन गया है। दुःख – तकलीफ़ की झाईं पास नहीं फटकने देता। फक्कड़ और मसुब्रा। मन ही मन विमली को चाहती हैं। उससे विवाह करना चाहता है। विमली को कुइसा, डरेवर बाबू, बिल्लर तीनों चाहते हैं। किन्तु विमली अपने उस पति से अभी भी मन से बँधी है जिसकी तस्वीर भी उसे याद नहीं है।

महतारी बाप का जितना ध्यान विमली रखती है, उतनी तो इस गाँव में किसी का लड़का भी नहीं रखता। लड़के का ध्यान आते ही उसकी माँ पतोह को और गाँव की फुटनी-घरफोडनी औरतों को सरापने लगती है। उसका बेटा विमली से दस साल बड़ा था। लेकिन पतोहू ने आते ही उसे अपने ही अपने बस में कर लिया। गाँव की औरतों ने आग में पलीता लगाया था और आने के छः माह के अंदर पतोहू लड़के को लेकर अलग हो गयी थी। उसी साल दीवार के नीचे दबने से विमली के बाप के दोनों हाथ बेकार हो गए थे। घर में खान के लिए अन्न का दाना नहीं था। बाप की दवाई के लिए पैसा कहाँ से आता? पतोह के जेवर सास के पास ही रखे थे। जमीन में दबाऐ हुए। उसी में से एक थान गिरवी रखना चाहती थी बुढ़िया। सुनते ही अगियाबैताल हो गई थी पतोहू। बिना पानी पिए तीन दिन तक इसी बात पर लड़ती रही थी। सात पुस्त को गरियाती रही थी। लड़के ने सिर उठाकर एक बार भी उसे मना नहीं किया। तीसरी रात झोपड़ी खोदकर गहने ढूँढ निकालें थे पतोहू ने और उसके बेटे को लेकर अपने मायके चली गयी थी जैसे बकरे के गले में पगहा लगाकर ले जाए कोई। विमली के माता –पिता बिना खाना–दाना के भूखों मरने के लिए मोहताज हो जाते हैं तो विमली की माँ सरपंच की पत्नी के पैर पकड़कर रोती है कि अगर बुढ़ी-बुढ़ा के पेट में कुछ नहीं गया तो सुबह उठने लायक नहीं रहेंगे। लेकिन सरपंच की औरत ने साफ मना कर दिया। बिना कोई चीज गिरवी रखे कानी कौड़ी नहीं दे सकती वह। और गिरवी रखने की सारी चीजें लेकर पतोहू मायके जा चुकी थी – विमली टुकुर –टुकुर माँ का रोना देख रही थी। रात भर में विमली ने निर्णय लिया कि "नहीं करना उसे गोबर-झाड़ू, जहाँ माँगने पर भीख भी नहीं मिल सकती।"[२] " तब से विमली भट्टे पर काम करने का मन बना लेती है। "अपना ही क्यों ? सबका पेट पालेगी वह !" भाई भाग गया तो क्या ? वह लड़का बनकर रहेगी। नया-नया भट्टा

खुला है गाँव में। काम की अब क्या कमी है ?-कौन कहता है कि आदमी – लडके ही काम कर सकते हैं भट्टे पर ? रांची की मजदूरिनें औरतें नहीं है? वे किसी से कम काम करती हैं? तब वह क्यों नहीं कर सकती ?कितनी बार तो बुलाने आ चुका हैं भट्टे का मुंशी गाँव की औरतों लडकियों को। वह कल से ही नाम लिखा देगी --- जितनी ईंट ढोओ उतना पैसा। ठेके पर!

इसी भट्टे पर डरेवर जी अपनी ट्रक लेकर आते थे। शुरू–शुरू में डरेवर जी के लिए भट्टे पर खाना बनाने का ज़िम्मा उस पर पड़ा तो बड़ी खुश हुई थी वह। लेकिन उसका 'कारन' दूसरा था। तब वह बहुत छोटी थी। खाना बनाने,खिलाने,बर्तन माँजने, चौका लगाने आदि में वह आराम से चार घंटे गुजार देती थी। खान साहब खाना बनाने की मजूरी पांच रूपये अलग से देते थे।पाँच रुपये तब दिनभर की दिहाड़ी के बराबर होते थे। लेकिन खुशी का असली कारण था चार घंटे के लिए ईंट ढोने से फुर्सत ! एक खेप में बारह ईंट की लदनी। दोपहर भर में ही गर्दन अकड़ जाती थी इसी भट्टे पर काम करने वाली बिल्लर भी विमली को चाहता है, एक बार उसे बदमाशी भी करने की कोशिश भी करता है।

बिल्लर की बहन रामकल्ली 'विमली' को झोपड़ी में एक बात लेकर आई थी। जिसमें विमली के महतारी बाप का भी फायदा है। वह विमली के घरवालों को बताती है – कि विमली का आदमी तीन साल से घर नहीं आया कलकत्ते से। रुपया– पैसा भी नहीं भेजता बाप के पास। दिहाड़ी मजदूरी करता है। गुन का न सहूर था है। अगर विमली की माई विमली को बिल्लर के साथ विदा कर दें—उन लोगों कि रीति मैं यह कोई अनोखी बात नहीं है। महतारी-बाप के मर जाने से बचपन में शादी नहीं हो सकी वरना सौ लड़को में एक लड़का है बिल्लर। डरेवरी करता है। चार पैसा कमाता है। राम-जानकी जैसी जोड़ी रहेगी दोनों की। गाँव में ही झोपड़ी खड़ी कर दी जायेगी। आँख के सामने रहेंगी दोनों। विमली के माँ – बाप चाहें तो घर जमाई बनकर रहने के लिए तैयार हो जाएगा बिल्लर।लड़के की कमी भी नहीं खलेगी। नहीं तो विमली के जाने के बाद कौन है एक रोटी बनाकर देने वाला दोनों को? लड़के वाला चाहेगा तो बिल्लर लगन का हर्जाना भी देने को तैयार है।[१]

गाँव भर में विमली को लेकर तरह - तरह की अफवाहें फैलती है तो विमली का ससुर उसे आकर विदा करा ले जाता है। विमली भी सच्चे मायने में ससुराल जाने के लिए प्रसन्न भी रहती है क्योंकि उसे भी अपने बचपन के विवाह पर काफी भरोसा है। इसलिये जब विमली कि माँ बिल्लर से शादी का प्रस्ताव रखती है तो विमली भड़क जाती है कहती है –"मेरा विवाह तो तू पहले कर चुकी है रे ! फिर दूसरा घर करने की काहे सोच रही है ? माँ उसे बताती है वह लड़का कई साल से घर नहीं आया बेटी !"[२] तो भी विमली माँ के बहकावे में नहीं आतीं कहती है – "लेकिन जिन्दा तो है। चिठ्ठी – पत्री लिखने पर वक्त – जरुरत क्यों नहीं लौटेगा? मेरा 'वियहा' है वह। क्या सोचेगा ?" माँ बिल्लर के बारे में बताती है कि बिल्लर जाना –सुना अच्छा लड़का है। अच्छा कमाता – धमाता है। " तो विमली माँ से पूछती है – तो क्या मेरा आदमी लूला-लंगड़ा-काना है। माँ विमली से बताती है कि उसका पति नौकरी – चाकरी ठीक नहीं करता। घर भी पैसा–कौड़ी नहीं भेजता। तब तुझे क्या खिलाएगा ? क्या सुख देगा। विमली माँ पर भड़क जाती है कहती है- "यह आज सोच रहा है। पहले क्यों नहीं सोचा ? क्या जरुरत थी बचपन में ही किसी के गले से बाँध देने की ?" "आज सोच सकती है अगर उसमें कोई खराबी है। कम पैसे से ही कोई ख़राब हो जाता है छोटा हो जाता है। वियाह तूने लड़के से किया था कि पैसे से?मेहनत करेगा आदमी तो एक रोटी कहीं भी मिलेगी। आदमी को अपनी मेहनत पर रीझना चाहिए कि दूसरे के पैसे पर ?[३] " दस रुपए के हुक्के – तम्बाकू पर तूने अपनी बिटिया को ही रांड समझ लिया रे ? बोल, कैसे सोच लिया ऐसा ? जिसकी औरत उसे पता भी नहीं तू उसे दूसरे को सौंप देगी ? गाय -बकरी समझ लिया।

विमली का चरित्र अत्यंत उद्दात्त रूप में प्रस्तुत होता है। जहाँ 'तिरिया चरित्तर' को न समझने कि बात पूरा जग करता आया है वहीँ विमली का चरित्र अनेकों पथभ्रष्ट युवा – पीढियों को मार्गदर्शन करता है। जो रूपये, पैसे,धन-दौलत,खेती-बाड़ी, जमीन-जायदाद के चक्कर में न पड़कर वैवाहिक संस्थान को महत्व देती है। अपने पति से मिलना चाहती है चाहे वह किसी भी हाल में हो उसके साथ रहना चाहती है। विवाह-बंधन पर विश्वास रखती है। भट्टे पर काम करते हुए भी सभी की बुरी नज़र से स्वयं को बचाये रखती है|

विमली का ससुर इन सब भट्टे की अफवाहों को सुनकर आनन-फानन में विमली का गौना करा ले जाता है। गौना करने के बाद भी वह अपने बेटे को कलकत्ता से नहीं बुलवाता। बहू का शोषण करता है। बहू के गौने से आने के बाद तुरंत तीन दिन बाद अपनी बहन को गाँव भेज देता है। उससे जबरदस्ती करने की कोशिश करता है तो विमली शुरू – शुरू में तो नई पतोहू जैसा शरम – लिहाज की। रीं – रीं करके रोना – हम बिटिया बराबर अही। आप बाप बराबर। रो – रोकर पैर छान लेती थी दोनों हाथों से। लगता था अब ढ़ीली पड़ी कि तब। लेकिन बाद मैं बिल्ली जैसी खूँखार। वैसे ही गुर्राहट। पंजे मारना। हाथ झटकना। बिल्ली जैसे नाख़ून। सारा मुँह , नाक, कान नोच लिया है। पूरा चेहरा 'परपरा, रहा है। जलन!

विमली का ससुर बिसराम गाँव वालों के चेताने पर घर के बाहर पेड़ के नीचे खटिया बिछाकर सोने लगा। खुद के लिए अलग मडई भी बना ली छोटी सी, अब उसी में सोता है किन्तु उसके मन का मैल अभी गया नहीं। वह विमली को झाँसे में लेकर कहता है, " मैं बहुत शर्मिंदा हूँ बहू ! अगर तूने माफ़ नहीं किया तो नर्क में भी जगह नहीं मिलेगी मुझे। किसुन्वा ओझा ने गाँजे में कोई बूटी मिलाकर दिया था। मति भ्रष्ट कर देने वाली बूटी। उसी से हफ्ते भर से सिर पर पाप सवार था और हफ्ते भर में मेरी मरजाद का नाश हो गया बिटिया ! शिवाले के पुजारी बाबा ने विचारकर नाम खोला। लक्ष्मी है बहू तू लक्ष्मी है, जो अपना पानी और मेरी पगड़ी, दोनों बचा ले गयी।"[३]

किन्तु, यह सब बातें मात्र मायाजाल थी बिसराम अवसर की तलाश में था। एक दिन पंजीरी और चरणामृत में अफीम मिलाकर वह विमली को दे देता है। विमली श्रद्धधाभाव से चरणामृत पी लेती है और उसकी बेखुधी में बिसराम उसका बलात्कार करता है। विमली नशा उतरने पर बिसराम को फूँकने का निर्णय लेती है उसकी मडहिया में जाती है तो बिसराम वहाँ न होकर मंदिर में पहुँचा रहता है। इसलिए वह बच जाता है। विमली अपने पति का पता लेकर उसे ढूँढने कलकत्ते जाने के लिए रेलवे स्टेशन जाती है। बिसराम उसपर अपनी पत्नी के गहने लेकर डरेवर के साथ भागने का आरोप लगाता है। गाँववाले उसे ठूँठ-ढाँढकर लाते हैं पंचायत बुलाई जाती है और पंचायत के निर्णय के अनुसार सोहाग के दाग कि सजा, सोहाग की निशानी, बिंदी-टिकुली लगाने की वजह, बीचों-बीच माथे पर दागनी। जिंदगी भर के लिए कलंक-टीका। कलझुल की डाँडी लाल करके दागने का काम बिसराम के जिम्मे। पतोहू की निगरानी करने में चूक हुई इसकी सजा। विमली का पिता जो विमली के समाचार देने पर विमली की विदायी कराने आया रहता है वह भी रात के अँधेरे का फायदा उठाकर बेटी तक न पहुँचकर उल्टे अपने गाँव लौट जाता है।

समग्रत:हम कह सकते हैं कि 'तिरिया चरित्र, की विमली सर्वगुण संपन्न,मेहनती,पतिव्रता स्त्री होने पर भी कलयुग में उसपर विभिन्न आरोपों द्वारा शोषण किया जाता है। उसका शारीरिक और मानसिक शोषण उसे कुयें, बावड़ी में न ढकेलकर उसे जिन्दा रहने की प्रेरणा देता है। बचपन में सरपंच की पत्नी द्वारा माँगने पर फूटी कौडी न दिये जाने पर जहाँ वह भट्टे पर काम करके पूरे परिवार के दो जून की रोटी का इंतजाम करती है। घर में पूरी गृहस्थी तैयार करती है। नियम – संयम से अपने मायके में सबकी नजरों से अपनी इज्जत बचाये रखती है। पति के मिलन की अपेक्षा लिए ससुराल आती है वहीँ अपने ससुराल में ससुर की हवस का शिकार बनती है। पंचायत भी ससुर को सजा न देकर इसके ही तिरिया-चरित्र पर उँगली उठाता है और इसे

दगनी (माथे के बीचो-बीच कलछुल से दागना) की सजा दी जाती है। अस्तु,कह सकते हैं कि,भारतीय समाज के ग्रामीण शोषण व्यवस्था को शब्दबद्ध करने का सफल प्रयास शिवमूर्ति जी ने किया है।

सन्दर्भ :

१) केशर कस्तूरी :लेखक शिवमूर्ति ::राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.१-बी,नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ ,पृष्ठ संख्या ११५

२) केशर कस्तूरी :लेखक शिवमूर्ति ::राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.१-बी,नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ ,पृष्ठ संख्या ११६

३) केशर कस्तूरी :लेखक शिवमूर्ति ::राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.१-बी,नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ ,पृष्ठ संख्या १२५